जीवन जीने की प्राकृतिक कला

अशोक मानव

मानव जीवन प्रकृति विज्ञान का सर्वश्रेष्ठ परिणाम है। मानव प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। प्रकृति मानव द्वारा अपने रहस्यों की जानकारी देती रहती है पर यह जानकारी उन्हीं मानव को हो पाती है। जो प्राकृतिक गलती से चलते हैं और किसी एक विषय में खो जाते हैं। ऐसे मतानव प्रकृति के गूढ़ रहस्य की जानकारी प्राप्त करके मानव समाज के लिए छोड़ जाते हैं। यह जानकारी वैज्ञानिक की वैज्ञानिकता में, दार्शनिक की दार्शनिकता में, कवि की काव्य रचना में, महात्मा द्वारा बनाई गई जीवन शैली में और अन्य विशिष्ट लोगों द्वारा बनाई गई विशिष्ट जानकारी में देखने को मिलती है। मानव द्वारा प्रकृति के रहस्य को जानने की एक सीमा होती है। मानव प्रकृति के पदार्थ और जीव के गुण को जानकर दूसरे गुण से मिलाकर एक तीसरे गुण को पैदा कर सकता है, पर पदार्थ और जीव का निर्माण प्रकृति द्वारा होता है। मानव इसके रहस्य को जानकर इअसे अधिक सुंदर और शक्तिशाली बना सकता है। इसमें हर व्यक्ति का दायित्व बनता है कि अपनी क्षमतानुसार सहयोग प्रदान करें।

मानव जीवन के पास अथाह शक्ति होती है पर उसकी सही जानकारी न होने के कारण उसका सदुपयोग नहीं हो पाता है। ज्यादातर मानव अपने विषय में ही उलझा रह जाता है। उससे बाहर भी निकल पाता है तो दूसरे द्वारा बोले गए व्यंग्य बाण से धराशायी हो जाता है। जहां लोगों द्वारा उसे सहयोग मिलना चाहिए वहां ज्यादातर असहयोग मिलता है। उत्साहित करने की जगह लोग हतोत्साहित कर देते

जीवन में घटने वाली घटनाएं प्रकृति की प्रवृत्ति होती है। इसे कोई चुनौती नहीं दे सकता। इसके अंदर से मंजिल के मार्ग को तलाश लेने को जीवन जीने की कला कहते हैं।

कभी–कभी अपनों से भी देखने को मिलती है। मानव जीवन में कुछ प्राकृतिक दुर्घटना कुछ पारिवारिक व कुछ सामाजिक कुछ व्यवस्था से और कुछ बड़ा आदमी बनने की चाह से व्यवधान उत्पन्न होता है। इन्हीं समस्याओं में मानव उलझा रहता है और अपनी जिम्मेदारियों का सही निर्वाह नहीं कर पाता है। मन अशांत रहता है। हलचल के कारण उसकी गति प्रकृति के गति से तेज हो जाती है और अपने विषय पूर्ति की सही जानकारी नही कर पाता है। अपने को थका, असहाय पाता है। मानव इस उलझन से बाहर निकलकर शांत मन से अपने कर्तव्य का निर्वाह कर सकता है।

जीवन जीने की कला की पहली शुरुआत विश्वास से होती है और विश्वास शक्तिशाली बनाने के लिए एक ईष्ट बनाकर उसपर ध्यान करने की जरूरत पड़ती है। ध्यान से पूर्व ईष्ट की प्रति विश्वास बनाने की जरूरत होती है। ईष्ट उसे बनाना चाहिए जिसके प्रति सबसे